16/7/2020

MA. Semester II

Paper 5, unit I

Topic— दीर्घिकृत अवधान (Sustained attention)

Nature and theory of sustained attention)

किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण के दौरान, दीर्घीकृत अवधान (Sustain attention) एक महत्वपूर्ण घटना है, जो व्यावहारिक दृष्टि से काफी महत्व रखता है। दीर्घिकृत अवधान निगरानी (Vigilance) की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अधिक समय तक किसी घटना या परिस्थिति पर सतर्कतापूर्वक अपने ध्यान को केंद्रित रखता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान एक विशेष परिस्थिति में दीर्घिकृत अवधान का अध्ययन किया गया। उस समय रडार संचालकों (radar operators) में अवधान से संबन्धित समस्या देखा गया। उन रडार के संचालकों को दुश्मन के हवाई जहाज से रडार में उत्पन्न संकेतों की पहचान करनी थी। कुछ समय तक इस प्रकार के निगरानी करने के पश्चात संचालकों के कार्य-निष्पादन में गिरावट के लक्षण देखे गए। मैकवर्थ (Mackworth, 1950) ने पहला प्रयोग किया जिसमें इन्होंने रडार के अनुरूप प्रदर्शन हेतु एक घड़ी का उपयोग किया। इसीलिए इसे घड़ी परीक्षण (clock test) कहा जाता है। इस घड़ीनुमा उपकरण में कोई सांकेतिक चिन्ह नहीं था केवल काले रंग की सूई (black pointer) थी जिनकी गति पर प्रयोज्य को सतर्कता के साथ निगरानी करने का निर्देश दिया गया।

Page

इसके अलावे दीर्घकृत अवधान की व्याख्या करने हेतु अनेक सिद्धान्त भी प्रतिपादित किए गए हैं जेरिसन एवं पिकेट (Jerison and Pickett, 1963) द्वारा प्रतिपादित प्रत्याशा सिद्धान्त (Expectancy theory) प्रमुख है। इस सिद्धान्त के अनुसार जिन संकेतों पर दीर्घकृत अवधान देना होता है उससे संबंधित पूर्व से संचित सूचनाओं (Stored information) तथा उन अवस्थाओं जिनसे कोई संकेत उत्पन्न हो सकता है का पूर्वानुमान (Prediction) दीर्घकृत अवधान में अहम भूमिका रखती है। इस सिद्धान्त के अनुसार संकेतों का सही पहचान करने की तत्परता और उक्त संकेत के उपस्थित होने की प्रत्याशा स्तर के बीच धनात्मक सहसंबंध होता है। अतः कोई विवेचित संकेत (Critical Signal) के किसी समय विशेष में उपस्थिति की संभावित प्रत्याशा उक्त उत्तेजना का सही पहचान करने की मानसिक तत्परता को बढ़ा देता है। फलस्वरूप संकेतों का पता लगाने का सामर्थ्य बढ़ जाता है इस आधार पर दीर्घकृत अवधान की निपुणता उन्नत होती है।

Kumar Patil
Maharaja College, Ara.